

श्री स्वामी अखण्डानन्द जी जन्म-शताब्दी उत्सव

### स्वागत भाषण \*

नारायण समारम्भां, शंकराचार्य मध्यमाम् ।  
अस्मदाचार्य पर्यन्तां, वन्दे गुरुपरम्पराम् ।।

प्रातः स्मरणीय परम पूज्य श्री महाराज श्री अखण्डानन्द जी सरस्वती जी के चरणारविन्दों में प्रणाम; पुरी पीठाधीश्वर जगद्गुरु शंकराचार्य जी महाराज के श्री चरणों में सादर नमन्; सुमेरु पीठाधीश्वर जगद् गुरुशंकराचार्य स्वामी श्री चिन्मयानन्द जी महाराज एवं सभी सम आदरणीय संतों के चरणों में प्रणाम; समुपस्थित भक्त जन, एवं मातृवृन्द ।

आज हम सब भगवान बांके बिहारी जी की क्रीड़ास्थली तीर्थधाम वृन्दावन में परम पूज्य स्वामी श्री अखण्डानन्द सरस्वती जी महाराज के प्राकट्य के शताब्दी महोत्सव में सम्मिलित होकर आनन्दित होने के लिए एकत्रित हुए हैं ।

संतों का भूमि पर प्राकट्य मानवमात्र के कल्याण के लिए घटित दिव्य घटना होती है। संत की उपस्थिति संस्कृति और संस्कारों का रक्षण-पोषण करती है। उनके चिन्तन और प्रवचन मानवमून्यों का पुर्नःस्थापन और दिव्य वातावरण का सृजन करते हैं। उनका सान्निध्य आध्यात्मिक ऊर्जा प्रदान करता है। इसी कारण संत का जन्म दिन उत्सव का रूप ले लेता है।

श्री शान्तनु बिहारी भगवान श्री कृष्ण की कृपा से पूज्य गुरुदेव का प्राकट्य मां भागीरथी के पावन तट पर महाराई नामक ग्राम में हुआ। वृन्दावन बिहारी श्री कृष्ण एवं आनन्द वन बिहारी भगवान शिव के पारस्परिक प्रेम की प्रतिमूर्ति हैं हमारे श्री गुरुदेव।

ब्रह्मसूत्र, माण्डूक्य कारिका, मुण्डकोपनिषत् पर उनके प्रवचन से प्रतीति होती है जैसे साक्षात् आदि शंकराचार्य जी बोल रहे हैं। श्रीमद्भागवत्, नारदभक्ति सूत्र, श्रीमद्भागवतगीता पर उनकी वाणी श्री मधुसूदन सरस्वती की प्रतिध्वनि सी लगती है। आपके जीवन में ज्ञान, वैराग्य, भक्ति, व्यवहार सभी पूर्णरूपेण दिग्दर्शित होते हैं। गुरुदेव के प्रवचन और शिक्षा की तो बात ही क्या है ! उनके सहज व्यक्त छोटे-छोटे वाक्य भी मार्ग दर्शक हैं। जैसे कि धर्म की सरलतम व्याख्या करते हुये महाराज श्री कहते हैं कि यदि व्यक्ति स्वयं का निर्णायक बनकर सही-गलत का निर्णय करके धर्म का पालन नहीं कर सकता तो सत्ता, शासन, या राजदण्ड भी उसको अपराध करने से नहीं रोक सकते। पूज्य गुरुदेव का प्रसिद्ध वचन है —“नृत्य करते हुए ब्रह्म का नाम श्री कृष्ण है एवं शांत श्री कृष्ण का नाम ही ब्रह्म है।”

आपका वर्णन करना वाणी के लिए शक्य नहीं है। गोस्वामी जी की पंक्ति स्मरण

---

\* पूज्य स्वामी श्री गिरीशानन्द जी के गुरु श्रद्धेय स्वामी श्री अखण्डानन्द जी सरस्वती की जन्म शताब्दी के सप्तदिवसीय समारोह के शुभारम्भ पर दि. 05.12.2010 को प्रातःकाल वृन्दावन में स्वागत समिति की ओर से दिया गया वक्तव्य। कार्यक्रम की अध्यक्षता पुरी पीठ के जगद्गुरु शंकराचार्य स्वामी श्री शंकराचार्य स्वामी श्री महाराज ने की। सुमेरु पीठाधीश्वर जगद्गुरु शंकराचार्य स्वामी : श्री चिन्मयानन्द जी महाराज तथा अनेक विद्वान संतजन मंचासीन थे।

हो आती है —

अस स्वभाव कहुं सुनऊ न देखऊं ।  
केहि खगेश रघुपति सम लेखऊं ॥

पूज्य पाद स्वामी श्री अखण्डानन्द जी के दर्शन का सौभाग्य मुझे नहीं मिला किन्तु उनके प्रिय शिष्य श्रद्धेय स्वामी श्री गिरीशानन्द जी सरस्वती से उनके विषय में जो कुछ जाना है उसके आधार पर कह सकता हूं कि वे विषद् अध्ययन, गहन चिन्तन और अपरिमित माधुर्य के मूर्तरूप थे। अगाध आत्मज्योति से परिपूर्ण। पवित्रता, पुण्य और परोपकार की प्रभाएं उन्हें घेरे रहती थीं। गंभीरतम जिज्ञासाओं का विनोद मिश्रित समाधान कर कठिन को सरल और सरल को मृदुल बनाकर अपने आसपास के वातावरण में विनोद का वितरण करना उनका स्वभाव बन गया था। प्रभू का प्रेम उनकी मस्ती का सबब हुआ करता था। ऐसे ही संत चरित्र को लक्ष्य कर एक शायर लिखता है:

हर आन हंसी, हर आन खुशी,  
हर आन अमीरी है बाबा  
जब आशिक मस्त फकीर हुए  
तो क्या दिलगीरी है बाबा

अस्तु परमपूज्य स्वामी अखण्डानन्द जी का जन्म शताब्दी उत्सव एक उत्सव ही नहीं आनन्द महोत्सव है। इसीलिए इस तीर्थ भूमि में हम सभी को आशीषित करने के लिए पुरी के पीठाधीश्वर जगद्गुरु शंकराचार्य जी महाराज, सुमेरु पीठाधीश्वर जगद्गुरु शंकराचार्य जी महाराज, एवं सभी समादरणीय संत और विद्वजन बड़ी संख्या में यहां एकत्रित हुए हैं।

एक संत का सान्निध्य भी जीवन में दैवी सम्पदा का प्रादुर्भाव कर कल्याण कर सकता है। आज ऐसे एक नहीं अनेक संतों के चरणों में उपस्थित होकर उनका स्वागत और अभिनन्दन करने और उनके चरणों में श्रद्धा सुमन अर्पित करने का दुर्लभ अवसर मुझ अकिंचन को प्रदान करने के लिए परमपिता परमेश्वर का और उत्सव के आयोजकों का आभार ज्ञापित करता हूं ; परमपूज्य स्वामी श्री अखण्डानन्दजी सरस्वती का श्रद्धापूर्वक स्मरण करता हूं ; सभी सन्तजन का श्रद्धा और आदर से अभिनन्दन करता हूं। इस उत्सव की शोभा बढ़ाने और अपनी उपस्थिति से उत्सव के आनन्द को बहुगुणित करने के लिए पधारे सभी स्वामी अखण्डानन्द जी के शिष्यों, स्नेहियों, और धर्मप्राण सज्जन वृन्द, माताओं, बहिनों का स्वागत समिति की ओर से हार्दिक स्वागत करता हूं। आज के जैसे ही दुर्लभ अवसर होते हैं जबकि मनुष्य का शरीर मिलने की सार्थकता अनुभव होती है और बोलने का अवसर मिले तो वाणी कृत कृत्य होती है। गोस्वामी तुलसीदास जी के शब्दों में—

*साधन धाम विपुल दुर्लभ तनु, मोहि कृपा कर दीन्हों।*

हम तो केवल ईश्वर को धन्यवाद दे सकते हैं कि स्वामी श्री अखण्डानन्द जी जैसे सद्गुरु हमको प्राप्त हुए। आज भी अनेक भक्त आपकी पुस्तकें पढ़कर आपका शिष्यत्व स्वीकार कर लेते हैं। जिनमें नेपाल सुप्रीम कोर्ट के अनेक न्यायाधीश भी सम्मिलित हैं।

आनन्द महोत्सव की सफलता के लिये स्वामी श्री सच्चिदानन्द जी स्वामी, श्री महेशानन्द जी, श्री सीताराम जी जीवराजका, श्री बी. के. बिरला एवं आप सभी का प्रयास प्रशंसनीय है। मेरे पास तो शब्द ही नहीं हैं आप सब का स्वागत करने और आभार ज्ञापित करने के लिए। परम श्रद्धास्पद जगद्गुरु शंकराचार्य जी सहित महान् संतजन, विद्वज्जन एवं बड़ी संख्या में श्रद्धालु माताओं, बहिनों और सज्जन वृन्द का स्वागत करने और आप सभी ने इस आयोजन में पधारकर जो अनुकम्पा आयोजकों पर की है उसका स्वागत-समिति की ओर से आभार ज्ञापित करने के लिए शब्दों का अभाव है। रामचरित मानस का एक प्रसंग प्रासंगिक है।

श्री हनुमन्त लाल जी ने माता-सीता की खोज की, अशोक-वाटिका में उनका दर्शन किया, प्रभू श्रीराम का संदेश दिया और माता-सीता का संदेश लेकर लौट आये। भगवान राम श्री हनुमन्त लाल जी के प्रति कृतज्ञ हैं किन्तु कृतज्ञता कैसे ज्ञापित करें इस हेतु उनके पास भी शब्दों का अभाव हो रहा है। गोस्वामी जी भगवान राम के मनः स्थिति वर्णन करते हुए लिखते हैं—

*प्रति उपकार करहुं का तोरा। सन्मुख होइ न सकत मन मोरा।*

दो चौपाइयों के अनन्तर वे भगवान राम की स्थिति का मार्मिक चित्रण करते हैं—

*लोचन नीर पुलक अति गाता*

उनके नेत्र सजल हैं और शरीर में रोमांच है, शब्दावली शिथिल है। बस इतनी ही है भगवान श्रीराम की हनुमन्त लाल जी के प्रतिआभार की संपूर्ण अभिव्यक्ति।

मानस का आश्रय लेते हुए, इतना ही कह कर अपनी वाणी को विराम देता हूँ कि आप सब की इस महती अनुकम्पा से स्वागत समिति के सभी सदस्य और आयोजनकर्त्ताओं के नेत्रों में प्रेमाश्रु हैं और उनके शरीर रोमांचित हैं। शब्दों में आभार व्यक्त नहीं हो सकता अस्तु बारंबार स्वागतम्, बारंबार आभार, बारंबार प्रणाम।

धन्यवाद, प्रणाम।

////////////////////////////////////